24

जब दाऊद ने जीवन में गड़बड़ कर दी तो उसे ज़्या आवश्यक था

2 शमूएल् 11; 12

हम दाऊद की उपलज़्धियों का अध्ययन कर रहे हैं, परन्तु अब हमें गेयर (विषय) बदलना होगा। यह पाठ दाऊद की विजयों पर नहीं, बल्कि उसकी त्रासदी पर आधारित है; उसकी उपलज़्धियों की महिमा पर नहीं, बल्कि उसके जीवन के अंधकारमय समय पर है। इस प्रस्तुति को मैं ''जब दाऊद ने जीवन में गड़बड़ कर दी तो उसे ज़्या आवश्यक था''[1] नाम देता हूं। यह शीर्षक आकर्षक नहीं है, परन्तु यही वह शीर्षक है,जो हम सब की पहचान हो सकता है।

दाऊद ने बड़े पैमाने पर अपने जीवन में गड़बड़ की (2 शमू. 11)

मुझे आपको यह विश्वास दिलाने की आवश्यकता नहीं है कि दाऊद ने अपने जीवन में गड़बड़ नहीं की। हम इस कहानी से भली-भांति परिचित हैं।

पाप

दाऊद सीरियाई तथा अज़्मोनी लोगों से लड़ रहा था। सीरियाई लोग हार गए थे, और अज़्मोनियों को रज़्बा नगर तक धकेल दिया गया था। अज़्मोनी सेना को रज़्बा में रोक दिया था। दूसरा शमूएल 11 अध्याय आरज़्भ होता है: ''फिर जिस समय राजा लोग युद्ध करने निकला करते हैं [जब रास्ता फिर खुल जाता है], उस समय, ... दाऊद ने योआब को, और उसके संग अपने सेवकों और समस्त इस्राएलियों को भेजा; और रज़्बा नगर को घेर लिया।'' फिर हमें वे निर्णायक शज़्द मिलते हैं: ''परन्तु दाऊद यरूशलेम में रह गया'' (आयत 1)। मेरी दादी कहा करती थी: ''खाली दिमाग़ शैतान का कारखाना होता है।''

बसंत के सुस्ताने वाले मौसम की एक शाम, जब दाऊद के आदमी रज़्बा की लड़ाई में मर रहे थे, तो वह अपने महल की छत पर टहलने के लिए गया।[2] ''**और छत पर से उसको** एक स्त्री जो अति सुन्दर थी, नहाती हुई देख पड़ी'' (11:2)। इस दृश्य पर और इस पर कि किस का दोष अधिक था, अलग-अलग अनुमान लगाए जाते हैं,[3] परन्तु हम नहीं जानते कि वहां ज़्या-ज़्या हुआ था,[4] और अनुमान लगाने वाली कोई बात भी नहीं है। एक बात हम जानते हैं कि जब दाऊद परीक्षा में पड़ा, तो उसे तुरन्त अपने आप को पीछे कर लेना चाहिए था। पौलुस कहता है, ''व्यभिचार से *बचे रहो*'' (1 कुरिन्थियों 6:18)। इसके बजाय, दाऊद ने वासना को अपने मन में बढ़ने दिया, जो ऐसी प्रक्रिया है, जिसके बारे में याकूब कहता है कि यह आत्मिक मृत्यु का कारण बनती है (याकूब 1:14, 15)।

दाऊद ने उस स्त्री के बारे में पता लगाया और पाया कि वह हित्ती ऊरिय्याह की पत्नी बतशेबा थी। हित्ती कौम का इतिहास इस्राएल के इतिहास से मिलता-जुलता ही था (उत्पत्ति 23:1-20; 25:9; गिनती 13:29; यहोशू 9:1, 2; 11:3; न्यायियों 3:5, 6; 1 शमूएल 26:6)। ऊरिय्याह जन्म से इस्राएली नहीं था, परन्तु उसके नाम का अर्थ ''यहोवा मेरी ज्योति है'' है और इस बात का संकेत है कि उसने या उसके माता-पिता ने यहूदी मत धारण किया हुआ था। 2 शमूएल 23 में दाऊद के ''शूरवीरों'' की सूची देखें; वहां ऊरिय्याह का नाम भी है (2 शमूएल 23:39; 1 इतिहास 11:41 भी देखें)। हित्ती ऊरिय्याह दाऊद के पुराने और विश्वास योग्य मित्रों में से, बहादुर योद्धा और बीते समय में दाऊद के लिए अपने प्राणों को जोखिम में डालने वाला आदमी था। परन्तु इस पर उसके प्रति दाऊद की वासना खत्म मिटी नहीं। परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करने के बजाय उसने उस समय के शासकों की तरह कार्य किया। उसने बतशेबा को अपने पास बुलाया, उसके साथ व्यभिचार किया, और घर भेज दिया।[5]

कुछ समय बाद बतशेबा ने दाऊद के पास संदेश भेजा कि ''मुझे गर्भ है।'' अब दाऊद के लिए अपने पाप को इसके लिए जिम्मेदार मानकर परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहने का समय है। लेकिन उसने अपने किए पर परदा डालने का यत्न किया। उसने दूत के हाथ युद्ध के मैदान में योआब के नाम संदेश भेजा कि अपनी सेना के अगुवे ऊरिय्याह को घर भेज दे।

अगली सात आयतें ऊरिय्याह की निष्ठा तथा वफादारी और दाऊद की धोखेबाजी और बेईमानी में अंतर बताती हैं। ऊरिय्याह युद्ध के मैदान से सीधा महल में पहुंचा, उसके चेहरे पर युद्ध की धूल देखी जा सकती है। उसे बुलाने का दाऊद का पहला बहाना युद्ध की स्थिति के बारे में पूछना है। एक ओर ले जाकर, दाऊद ने सिपाही से कहा, ''अपने घर जाकर अपने पांव धो'' (11:8)। अन्य शब्दों में, ''तुझे कुछ विश्राम और मनोरंजन की आवश्यकता है। घर जा, अपने जूते उतार, नहा धोकर युद्ध की मैल उतार, घर का बना खाना खा, थोड़ा सुस्ता, और अपनी पत्नी के साथ थोड़ी देर मौज कर।'' दाऊद ने हिसाब लगाया कि यदि ऊरिय्याह दिनों की गिनती नहीं करेगा, तो उसे लगेगा कि बच्चा उसी का है। सिंहासन के कमरे से ऊरिय्याह के बाहर निकलते ही, दाऊद ने उसे घर जाने के लिए अतिरिक्त प्रोत्साहन देते हुए उसके पीछे इनाम[6] भेज दिया।

परन्तु दाऊद ने कर्तव्य के प्रति ऊरिय्याह के समर्पण का हिसाब नहीं लगाया था । ऊरिय्याह का घर दाऊद के महल से कुछ ही कदम की दूरी पर था,[7] परन्तु वह वहां नहीं गया। इसके बजाय युद्ध के रंग में वह ''अपने स्वामी के सब सेवकों के संग राजभवन के द्वार में लेट गया'' (11:9) ! जब दाऊद को यह बताया गया, तो वह स्तज़्ध रह गया। उसने ऊरिय्याह को अपनी नज़र से देखा था; उसने यह कल्पना भी नहीं की थी कि कोई बतशेबा से दूर रह सकता है। उसने उस बहादुर योद्धा को बुलाया और उससे पूछा, ''ज़्या तू यात्रा करके नहीं आया? तो अपने घर ज़्यों नहीं गया?'' (11:10)। ऊरिय्याह के जवाब से दाऊद के शूरवीरों की पहचान रही उनकी सच्ची निष्ठा का पता चलता है:

> जब सन्दूक[8] और इस्राएल और यहूदा झोंपड़ियों में रहते हैं, और मेरा स्वामी योआब और मेरे स्वामी के सेवक खुले मैदान पर डेरे डाले हुए हैं, तो ज़्या मैं घर जाकर खाऊं, पीऊं, और अपनी पत्नी के साथ सोऊं? तेरे जीवन की शपथ, और तेरे प्राण की शपथ, कि मैं ऐसा काम नहीं करने का (11:11)।

मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि परमेश्वर के सन्दूक के प्रति अपनी श्रद्धा बताने, अपने सेनानायक और सेना के बारे में इतना सोचने, और तपा देने वाली रेगिस्तानी धूप में अपने साथी सिपाहियों के डेरा लगाने पर ऊरिय्याह के स्वयं आनंद करने से इनकार कर देने पर, दाऊद कैसे न पिघला हो। परन्तु स्पष्टतया दाऊद को केवल यही सुनाई दिया होगा ''ज़्या मैं घर जाकर ... अपनी पत्नी के साथ सोऊं? ... मैं ऐसा काम नहीं करने का।''

मैं दाऊद के माथे पर से पसीना गिरते देखता हूं। मुझे उसके मन के विचार सुनाई देते हैं, ''अब ज़्या करूं?'' फिर उसने ऊरिय्याह को कुछ और दिन यरूशलेम में रुकने के लिए कहा ताकि वह दूसरी कोई तरकीब लगा सके। दूसरी तरकीब के अनुसार मदिरा पिलाने की चाल चली गई। ज़्योंकि यदि ऊरिय्याह नशे में धुज़ हो जाए, तो वह अपने आदर्शों को भूलकर अपनी पत्नी के साथ सोने को जा सकता है।

उस रात दाऊद ने ऊरिय्याह को खाने पर बुलाया। यह भोज परम प्रधान परमेश्वर के सेवक के बजाय बकूस [मिथिहास में, शराब का देवता–अनुवादक] के उपासक के लिए अधिक उपयुज़्त था। दाऊद ने ऊरिय्याह को खाने के साथ खूब शराब पिलाई। दाऊद ने एक बार फिर अपने सेवक की स्वामी–भज़्ति का गलत अनुमान लगाया। ऊरिय्याह नशे में होने पर भी शांत दाऊद से अच्छा था। ऊरिय्याह फिर भी ''अपने घर न गया'' (11:13), बल्कि महल के द्वार पर ही सो गया।

जब कोई अपने पाप पर परदा डालने का प्रयास करता है, तो निकलने की जगह नहीं मिलती। पिछले पाठ में हमने ध्यान दिया था कि ''दाऊद अपनी समस्त प्रजा के साथ न्याय और धर्म के काम करता था'' (2 शमूएल 8:15)। परन्तु अब अपने जीवन में पाप के कारण, इस धर्मी और निष्पक्ष न्यायी ने एक निर्दोष व्यज़्ति को मौत का फरमान सुना दिया था। दाऊद ने ऊरिय्याह को योआब के नाम एक चिट्ठी देकर युद्ध में भेज दिया, जिसमें कहा गया था, ''कि सब से घोर युद्ध के सामने ऊरिय्याह को रखना, तब उसे छोड़कर लौट

आओ, कि वह घायल होकर मर जाए'' (11:15)। यह हास्यास्पद लगता है कि दाऊद ने चिट्ठी ''ऊरिय्याह के हाथ'' ही भेजी (11:14); दाऊद को यकीन था कि जिस आदमी को उसने दण्ड दिया है वह उस चिट्ठी को खोलकर नहीं पढ़ेगा। यह भी हास्यास्पद है कि वह जानता था कि वह वफादार सिपाही होने के नाते आदेश मानने से पीछे नहीं हटेगा, चाहे उसे आत्मघाती मिशन पर ही ज़्यों न भेज दिया जाए।

एक बार फिर दाऊद के प्रति योआब की वफादारी देखने को मिलती है। उसने राजा की इच्छा के अनुसार ही किया। उसने ऊरिय्याह को मोर्चे पर आगे करके नगर पर आक्रमण कर दिया। अज़्मोनी लड़ने के लिए निकल आए, परन्तु इस्राएलियों ने उन्हें नगर के फाटक तक पीछे की ओर खदेड़ दिया। वहां उन्हें अज़्मोनी सिपाहियों तथा दीवार पर धनुर्धारियों के तीरों की बारिश और अज़्मोनी सिपाहियों की तेज तलवारों का सामना करना पड़ा।[9] ''दाऊद के सेवकों में से कितने खेत आए; और उनमें हिज़्ती ऊरिय्याह भी मर गया'' (11:17)। यहां ध्यान दें कि ऊरिय्याह के आस-पास लोग दाऊद के अपने पाप पर परदा डालने के असफल प्रयास के कारण मारे गए। सप्तति अनुवाद के अनुसार, अठारह दूसरे लोग मारे गए थे। उन्नीस परिवारों में किसी का पुत्र, किसी का भाई, किसी का पति, और/या किसी का पिता दाऊद की वासना पर परदा डालने के प्रयास में नाजायज मारा गया।

जब योआब ने दाऊद के पास अपनी रिपोर्ट भेजी, तो उसके शब्दों में कटाक्ष का स्पर्श था। वास्तव में उसने दूत से कहा, ''तब यदि राजा इस तर्कहीन निर्णय से परेशान हो जिस कारण इतने लोग मारे गए हैं,[10] तो कह देना, 'तेरा दास ऊरिय्याह हिज़्ती भी मर गया''' (11:20, 21)।

दूत ने वैसे ही किया जैसे योआब ने कहा था और अंत में यह कह दिया, ''और राजा के कितने जन मर गए, और तेरा दास ऊरिय्याह हिज़्ती भी मर गया'' (11:24)।

दाऊद का ''कुछ-खो-कर-कुछ-पा-लो'' वाला उज़र हमें निराश करता है। कपटपूर्ण उज़र कि ''योआब से यों कहना, कि इस बात के कारण उदास न हो, ज़्योंकि तलवार जैसे इसको वैसे उसको नाश करती है'' (11:25) देकर उसे कैसे चैन मिला होगा।

जब बतशेबा ने सुना कि ऊरिय्याह मर गया है तो उसने अपने पति के लिए शोक किया।[11] जब शोक का संक्षिप्त समय पूरा हो गया (शायद सात दिन [देखें उत्पज़ि 50:10; 1 शमूएल 31:13]), तो दाऊद ने उसे बुलवा लिया और वह उसकी पत्नी बन गई, उसके बढ़ते हुए जनानखाने में एक और वृद्धि हो गई। कई महीने बाद, बतशेबा ने एक स्वस्थ बालक को जन्म दिया। दाऊद के कानों में बधाइयां गूंज रही थीं, उसे अवश्य लगा होगा कि उसका पाप छिप गया है। किसी को भी उसकी अनैतिकता का पता नहीं चलेगा। किसी को भी नहीं? महल में सबको पता था। उसके सेवकों को पता था। उसके बच्चों को पता था। योआब को पता था। और लोगों को पता था।[12] सबसे महत्वपूर्ण, परमेश्वर को पता था, और दाऊद को स्वयं भी पता था।

दाऊद, जिसे परमेश्वर की संगति में सबसे निकट माना जाता था, ने कुछ ही दिनों में, दस आज्ञाओं का 40 प्रतिशत तोड़ दिया:[13] ''तू ... किसी की स्त्री का लालच न करना'';

''तू व्यभिचार न करना''; ''तू किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना''; ''तू खून न करना'' (निर्गमन 20:17, 14, 16, 13)। निर्णय तक पहुंचने के लिए परमेश्वर का भय रखने वालों को पंचायत की आवश्यकता नहीं है: ''इसे बाहर ले जाकर फांसी पर लटका दो!'' परमेश्वर का निर्णय सुनें: ''परन्तु उस काम से जो दाऊद ने किया था यहोवा क्रोधित हुआ'' (11:27ख)।

पीड़ा

दाऊद के पाप के तथ्य स्पष्ट हैं। हमें उन पापों को विस्तार से समझने की आवश्यकता है।

विचार करें कि दाऊद ने अपने पूर्वाधिकारी राजा शाऊल से कितना बड़ा पाप किया था। राजा शाऊल को अमालेकियों का पूर्ण विनाश करने की आज्ञा थी परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। इस पाप के कारण, उसे राजा के रूप में ठुकरा दिया गया (1 शमूएल 15:1-23)। बहुत से लोग सहमत होंगे कि हमारे दृष्टिकोण से, शाऊल के पाप की तुलना दाऊद के पापों की गंभीरता से नहीं की जा सकती है। यहां एक वह आदमी था जो परमेश्वर के साथ चलने वाला था; लेकिन अब वह पाप की ओर बढ़ रहा था, दुष्टता के दलदल में धंसता जा रहा था। शाऊल के पापों के परिणामों पर विचार करने पर हम दाऊद के पापों के संभावित परिणामों के बारे में सोच कर भय से कांप उठते हैं!

इससे भी महत्वपूर्ण, विचार करें कि पाप ने किस प्रकार दाऊद को लगभग खत्म ही कर दिया था। यदि आप केवल 2 शमूएल का विवरण ही पढ़ते हैं तो इस बात को समझ नहीं पाएंगे। घटनाओं की इस घिनौनी शृंखला में परमेश्वर के साथ प्रगाढ़ सज़्बन्ध रखने वाले व्यज़्ति के मन तथा आत्मा पर होने वाले प्रभाव की कल्पना करने का प्रयास करें। परन्तु हमें कल्पना करने की आवश्यकता नहीं है। भजन संहिता 32 हमें बताता है:[14]

> जब मैं [अपने पाप के विषय में] चुप रहा
> तब दिन भर कहरते कहरते
> मेरी हड्डियां पिघल गईं।
> ज़्योंकि रात दिन मैं तेरे हाथ के नीचे दबा रहा;
> और मेरी तरावट धूपकाल की सी झुरहिट बनती गई (आयतें 3, 4)।[15]

यदि आप ने दाऊद को उस समय देखा होता तो आप देखते कि वह बिल्कुल ऐसा ही लगता था, पीला पड़ा हुआ और थका सा, पर अभी भी सिंहासन पर बैठता और काम करता था। परन्तु भीतर से पाप उसे खाए जा रहा था। पाप ऐसा ही ज़तरनाक होता है!

तीन हज़ार साल पहले हुई इन घटनाओं को समझने की हमें ज़्या आवश्यकता है? ज़्योंकि हम भी उसी जाल में फंस सकते हैं, जिस में दाऊद फंसा था। ज़्योंकि पाप हमारे जीवन में बढ़ कर हमारी घसीटनी करवा सकता है। ज़्योंकि यह हमें भी वैसे ही फाड़ सकता है जैसे इसने दाऊद को फाड़ा था। ज़्योंकि, जब ऐसा हो जाए तो हमें पता होना चाहिए कि उस दलदल में से हम कैसे निकल सकते हैं।

अपने जीवन को फिर से पटरी पर लाने के लिए जो दाऊद के लिए आवश्यक था (2 शमू. 12)

जब लोग अपने जीवनों में गड़बड़ कर देते हैं, तो हम उन्हें सीधे होने और सही काम करने, अर्थात अपने जीवनों को पटरी पर लाने के लिए कहने की परीक्षा में पड़ जाते हैं। परन्तु अधिकतर मामलों में यह इतना आसान नहीं होता। बाइबल का हमारा पाठ सुझाव देता है कि जब दाऊद ने अपने जीवन में गड़बड़ कर दी तो उसे कम से कम चार बातों की आवश्यकता थी:

उसे किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो उसके साथ पूरी तरह से ईमानदार हो

दाऊद को इस बात में आशीष मिली थी कि उसका एक अच्छा मित्र था, जिसकी उसके साथ अच्छी बनती थी, जो उसे समझता था और जानता था कि उसके मन को छूने के लिए क्या करना चाहिए। वह मित्र नातान नबी था।[16]

परमेश्वर ने नातान को दाऊद के पास भेजा। नातान ने एक दृष्टांत के रूप में दाऊद के मन को दर्पण दिखाया:

> एक नगर में दो मनुष्य रहते थे, जिन में से एक धनी
> और एक निर्धन था।
> धनी के पास तो बहुत सी भेड़-बकरियां
> और गाय बैल थे;
> परन्तु निर्धन के पास भेड़ की एक छोटी बच्ची को छोड़
> और कुछ भी न था,
> और उसको उसने मोल ले कर जिलाया था।
> और वह उसके यहां उसके बाल-बच्चों
> के साथ ही बढ़ी थी;
> वह उसके टुकड़े में से खाती, और उसके कटोरे में से पीती,
> और उसकी गोद में सोती थी,
> और वह उसकी बेटी के समान थी (12:1-3)।

(मैं उस भेड़ को बच्चों के साथ खेलते, मेज पर कटोरों में से पीते, और उनके बिस्तर में उनके पांवों की ओर सोते देख सकता हूं।)

> और धनी के पास एक बटोही आया,
> और उसने उस बटोही के लिए,
> जो उसके पास आया था,
> भोजन बनवाने को अपनी भेड़-बकरियों
> वा गाय बैलों में से कुछ न लिया,

परन्तु उस निर्धन मनुष्य की भेड़ की बच्ची लेकर
उस जन के लिए, जो उसके पास आया था,
भोजन बनवाया (12:4)।

दाऊद को इस बात का श्रेय जाता है कि न्याय करने की उसकी समझ बड़ी स्टीक थी। उसे बड़ा क्रोध आया।

तब दाऊद का कोप उस मनुष्य पर बहुत भड़का;[17] और उसने नातान से कहा, यहोवा के जीवन की शपथ, जिस मनुष्य ने ऐसा काम किया वह प्राण दण्ड के योग्य है; और उसको उस भेड़ की बच्ची का चौगुणा भर देना होगा,[18] ज़्योंकि उस ने ऐसा काम किया, और कुछ दया नहीं की[19] (12:5, 6)।

नातान ने फिर निर्णायक शज्द कहे: ''तू ही वह मनुष्य है!'' (12:7क)।

बाइबल की मूल घटनाओं की फिल्म बनाना अद्‌भुत नहीं होगा, कि हम देख पाएं कि वे बातें *कैसे* हुईं? नातान नबी क्रोध से भरी आंखों से दाऊद के सामने खड़ा होगा, उसकी ओर अंगुली करके आरोप लगा रहा होगा: ''तू ही वह मनुष्य है!'' परन्तु मुझे नातान के बारे में एक टूटे हुए मन वाले मित्र के रूप में विचार करना अच्छा लगता है, जिसने दाऊद के क्रोधित होने के बाद, आंखों में आंसू लिए कांपती हुई आवाज से कहा, ''दाऊद, मैं *तेरी* ही बात कर रहा हूं। तेरे पास इतना कुछ है और ऊरिय्याह के पास इतना कम था, और तू ने जो कुछ उसके पास था यहां तक कि उसकी पत्नी और उसका प्राण तक ले लिया।''

परन्तु जो नातान ने किया, यह एक ईमानदारी से दिया संदेश था, जिससे दाऊद के मन की अकृतज्ञता प्रकट हो गई:

... इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि मैंने तेरा अभिषेक करा के तुझे इस्राएल का राजा ठहराया, और मैंने तुझे शाऊल के हाथ से बचाया; फिर मैंने तेरे स्वामी का भवन तुझे दिया, और तेरे स्वामी की पत्नियां तेरे भोग के लिए दीं; और मैंने इस्राएल और यहूदा का घराना तुझे दिया था; और यदि यह थोड़ा था, तो मैं तुझे और भी बहुत कुछ देने वाला था। तू ने यहोवा की आज्ञा तुच्छ जानकार ज़्यों वह काम किया जो उसकी दृष्टि में बुरा है? ... (12:7-9)।

परमेश्वर ने दाऊद को सब कुछ दिया था और, यदि उसे आवश्यकता थी, तो परमेश्वर उसे और दे देता। परन्तु दाऊद परमेश्वर के प्रबधों से संतुष्ट नहीं था इसलिए उसने किसी दूसरे की चोरी की थी। यह संदेश कठोर था परन्तु था सत्य। दाऊद को इसी की आवश्यकता थी।

आज के धार्मिक संसार में, आपको हर प्रकार के संदेश आपकी आवश्यकता के अनुसार मिल जाएंगे। यदि आप ऐसा प्रचार चाहते है जो बताता हो कि आपके जीवन में सब कुछ सही है, तो आपको मिल सकता है; परन्तु जब पाप के कारण जीवन में गड़बड़ हो तो आपको राहत दिलाने वाले संदेश की आवश्यकता नहीं है। यदि नातान दाऊद के पास

आकर उसे उसका पाप बताए बिना, उसके कंधे पर हाथ रखकर कहता, ''मैं जानता हूं कि तू परेशान है, मुझे भी अफसोस हैं''? दाऊद को इस समय इन सब की आवश्यकता नहीं थी और न आपको है। आपको किसी ऐसे व्यज़्ति की आवश्यकता है जो अपके जीवन में आपके पाप के बारे में ईमानदारी से बता सकता हो, अर्थात स्नेहपूर्वक ईमानदार ही नहीं बल्कि सचमुच ईमानदार हो!

कुछ क्षेत्रों में यह प्रचलित नहीं हो सकता, परन्तु मैं पाप के विरुद्ध हूं। पाप एक शत्रु है। यह पुराने ढंग का हो सकता है, परन्तु मैं शराब पीने, नशे करने, नाच गाने, जुआ, गर्भपात, भड़काऊ वस्त्र , तलाक, भौतिकवाद, विवाह के बिना शारीरिक सज़्बन्ध, पति-पत्नी की एक-दूसरे के साथ बेईमानी, शिक्षा सज़्बन्धी गलती और ऐसी बातों से घृणा करता हूं। मैं केवल इन्हीं विषयों पर प्रचार नहीं करता, ज़्योंकि बाइबल के एक हजार से अधिक महत्वपूर्ण विषय हैं। दूसरी ओर, मैं ऐसे विषयों पर विश्वास रखता हूं और अपने विश्वास को छुपाता नहीं हूं।

हो सकता है कि आपका जवाब हो ''मुझे यह नहीं चाहिए। मुझे अपनी बुराई पसंद नहीं है। मुझे तो प्रशंसा ही चाहिए।'' मैं दोहराता हूं: यदि आपके जीवन में कुछ गड़बड़ है तो सबसे पहले आपको ऐसे व्यज़्ति की *आवश्यकता* है जो आपके प्रति पूरी तरह से ईमानदार हो।

उसे एक मन की आवश्यकता थी,जो टूट सकता हो

परन्तु दाऊद को इससे भी अधिक की आवश्यकता थी। ईमानदारी से दिया गया संदेश तब तक किसी के काम का नहीं होना था, जब तक उसे सकारात्मक ढंग से स्वीकार न किया गया हो। दाऊद का भी ऐसा मन होना आवश्यक था जो टूट सकता।

हो सकता है कि दाऊद ने नातान के संदेश का कई तरह से उज़र दिया हो। वह उस प्रचारक पर क्रोधित भी हुआ हो सकता है। यह कोई असामान्य प्रतिक्रिया नहीं है। उसने पहले बहाने भी लगाए होंगे: ''गलती बतशेबा की ही थी, वह ही बाहर नहा रही थी,'' या ''यदि ऊरिय्याह इतना दृढ़ न होता तो आज जीवित होता।'' अपनी गलती का आरोप दूसरों पर लगाना कितना आसान है? परन्तु बहाने बनाने से दाऊद के जीवन की गड़बड़ी का समाधान नहीं होना था। वह और पाप करके अपने पहले पापों को छुपाने के लिए पाप करते रहने का निर्णय ले सकता था। वह राजा होने की अपनी शज़्ति का फिर इस्तेमाल करके नातान को मरवा सकता था।

दाऊद ने इनमें से कोई ढंग नहीं अपनाया था। इसके बजाय उसका मन टूट गया था। दाऊद परमेश्वर के मन के अनुसार इसलिए नहीं था कि वह सिद्ध था, बल्कि इसलिए था कि उसका मन संवेदनशील था। नातान को दाऊद के जवाब के लिए, 2 शमूएल 12:13 पर विचार करें: ''मैंने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है।'' गलती के लिए इस अंगीकार को भजन संहिता 51 में विस्तार से बताया गया है। इस भजन का पुराना शीर्षक इस प्रकार है, ''दाऊद का भजन जब नातान नबी उसके पास इसलिए आया कि वह बतशेबा के पास गया

था।'' दाऊद ने अपना मन खोल दिया:

हे परमेश्वर, अपनी करुणा के अनुसार
मुझ पर अनुग्रह कर;
अपनी बड़ी दया के अनुसार
मेरे अपराधों को मिटा दे।
मुझे भली भांति धोकर मेरा अधर्म दूर कर,
और मेरा पाप छुड़ाकर मुझे शुद्ध कर!
मैं तो अपने अपराधों को जानता हूं,
और मेरा पाप निरन्तर मेरी दृष्टि में रहता है।...

अपना मुख मेरे पापों की ओर से फेर ले,
और मेरे सारे अधर्म के कामों को मिटा डाल।

हे परमेश्वर, मेरे अंदर शुद्ध मन उत्पन्न कर,
और मेरे भीतर स्थित आत्मा नए सिरे से उत्पन्न कर।
मुझे अपने सामने से निकाल न दे,
और अपने पवित्र आत्मा को मुझसे अलग न कर।
अपने किए हुए उद्धार का हर्ष मुझे फिर से दे
और उदार आत्मा देकर मुझे संभाल (51:1-3, 9-12)।

हम में से हर किसी को यह पूछना चाहिए, ''क्या मेरा मन ऐसा ही है?'' हमारे जीवन गड़बड़ा जाने के समय जो-जो आवश्यक बातें हैं, वे कोई और नहीं दे सकता। या तो हमारे पास है या नहीं है। यदि नहीं है, और हम ऐसा मन बनाने की इच्छा नहीं रखते, तो हमें क्षमा मिलने की बहुत कम उम्मीद है।

उसे क्षमा के आश्वासन की आवश्यकता थी

तीसरा, दाऊद को क्षमा के आश्वासन की आवश्यकता थी। वह इस आश्वासन के बिना कि उसके पाप क्षमा हो गए हैं, नहीं चल सकता था। भजन संहिता 51:11 पर फिर ध्यान दें: ''मुझे अपने सामने से निकाल न दे, और अपने पवित्र आत्मा को मुझ से अलग न कर।'' दाऊद ने देखा था कि शाऊल से परमेश्वर का आत्मा उठ जाने के बाद क्या हुआ था (1 शमूएल 16:14से)। शाऊल उसके दिमाग से निकल चुका था। दाऊद राजा शाऊल को राहत देने के लिए हर रात वीणा बजाया करता था। अब दाऊद की पुकार थी, ''मेरे साथ ऐसा न हो!''

ऐसा नहीं था। परमेश्वर ने दाऊद को क्षमा करने का आश्वासन दिया है। दाऊद के यह कहने के बाद कि ''मैंने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है,'' नातान ने उसे बताया, ''यहोवा ने तेरे पाप को दूर किया है: तू न मरेगा''[20] (2 शमूएल 12:13)। नबी की इस बात से

दाऊद के मन का बोझ हल्का हो गया। भजन संहिता 32 से हमें उस क्षण के उसके आनंद का पता चलता है।

ज़्या ही धन्य है वह जिसका, अपराध
क्षमा किया गया
और जिसका पाप ढांपा गया हो।
ज़्या ही धन्य है वह मनुष्य
जिसकेअधर्म का यहोवा लेखा न ले,
और जिसकी आत्मा में कपट न हो।

... मैं ने अपना पाप तुझ पर प्रगट किया
और अपना अधर्म न छिपाया,
और कहा मैं यहोवा के साज़्हने अपने अपराधों को मान लूंगा,
तब तू ने मेरे अधर्म और पाप को क्षमा कर दिया (32:1, 2, 5)।

दाऊद इसके योग्य नहीं था, परन्तु परमेश्वर ने अपने असीमित अनुग्रह से उसे क्षमा कर दिया। दाऊद का मन ऐसा था, जो टूट सकता था; परमेश्वर ने दाऊद को क्षमा किया ज़्योंकि उसने मन फिराया और उसके पास लौट आया था।

यहां शाऊल और दाऊद में अंतर है। हमारे दृष्टिकोण से, शाऊल का पाप दाऊद के पाप जितना बड़ा नहीं था । परन्तु शाऊल का मन परमेश्वर पर लगा नहीं था। शाऊल को राजनीति, उपाय, राजवंश स्थापित करने, सज़्मान तथा महिमा पाने की चिंता थी। जब शाऊल को परमेश्वर के नबी द्वारा डांटा गया था, तो उसे इस बात की अधिक चिंता थी कि लोग ज़्या सोचेंगे, न कि इसकी कि परमेश्वर ने उसके बारे में ज़्या सोचा था। यद्यपि दाऊद का पाप गंभीर था, परन्तु अंदर से वह परमेश्वर के बारे में तथा अपने साथ उसके सज़्बन्ध के प्रति चिंतित था। जब उसे परमेश्वर के नबी ने डांटा, तो उसकी सबसे बड़ी चिंता उस सज़्बन्ध को फिर से बहाल करने की थी। मनों में अंतर होने के कारण, शाऊल को क्षमा का कोई आश्वासन नहीं मिला, जबकि दाऊद को मिल गया था।

जब हमारे मन पाप के कारण बेकाबू हो जाते हैं, तो हमें इस आश्वासन से बढ़कर कि यदि हम परमेश्वर की ओर लौटे तो वह हमें क्षमा कर सकता है और करेगा, किसी आश्वासन की आवश्यकता नहीं होती। इससे हमें आशा तथा सामर्थ मिलती है। कुछ लोगों के लिए यह विश्वास करना कठिन हो सकता है कि परमेश्वर इतना दयालु होगा। अपने आप से पूछें: ''ज़्या मेरा जीवन दाऊद के जीवन से भी बुरे रूप में अर्थात लोभ, व्यभिचार, झूठ तथा हत्या से भरा है ?'' विश्वास रखें: यदि परमेश्वर दाऊद को क्षमा कर सकता है, तो वह किसी को भी क्षमा कर सकता है। वह आपको भी क्षमा कर सकता है!

कोई आपज़ि न करे, इसलिए मैं यह निष्कर्ष पुराने नियम के एक हवाले के आधार पर कर रहा हूं। नये नियम में रोमियों 4:7, 8 पर विचार करें; ''धन्य वे हैं, जिन के अधर्म क्षमा

हुए, और जिन के पाप ढांपे गए। धन्य हैं वह मनुष्य जिसे परमेश्वर पापी न ठहराए।'' ज़्या ये शज़्द जाने-पहचाने लगते हैं ? लगने चाहिए। हमने उन्हें अभी भजन संहिता 32 में से पढ़ा है।[21] पुराने नियम में दाऊद ने कहा था, ''मैं जानता हूं कि यदि हम उसकी ओर लौट आएं तो परमेश्वर हमें क्षमा कर देगा। मेरे साथ यह हुआ है!'' नये नियम में पौलुस ने कहा, ''धन्यवाद परमेश्वर, यह आज भी सत्य है!''

पहले मैंने सिज़्के का एक पहलू दिखाया था कि अपनी आत्मिक स्थिति के बारे में हर एक का पूरी तरह से ईमानदार होना आवश्यक है। अब मैं सिज़्के का दूसरा पहलू दिखाता हूं: हर एक को यह पता होना आवश्यक है कि जब वह मन फिराता/फिराती और बदल जाता/जाती है तो उसे क्षमा मिल जाती है। प्रचारक के रूप में लंबी अवधि में मुझे शिक्षा सज़्बन्धी तथा नैतिक क्षेत्रों में सही और गलत में अंतर समझने और मानने वाली मजबूत मंडलियों में प्रचार करने का सौभाग्य मिला है। मैं यह कहकर भी रोमांचित हो जाता हूं कि उन सज़ी मंडलियों का परमेश्वर के अनुग्रह तथा कृपा में विश्वास है और वे अपने पाप मानकर प्रभु की ओर लौटने वाले लोगों को प्रेम से क्षमा कर देती हैं। मैंने कितनी ही बार पश्चाज़ाप करके लौटने वालों के आंसुओं को उन्हें ग्रहण करने वालों के आंसुओं के साथ मिलते देज़ा है!

पाप के विरुद्ध कड़ा स्टैंड लेने वाली मंडलियों के लिए अपनी शुद्धता को बनाए रखने के लिए किसी पापी को अपने बीच में स्वीकार न करने के लिए नाक चढ़ाना, स्नेह शून्य होना और न्याय करने वाला बनना आसान है। उज़्मीद है कि आप इस बात से चौंकेंगे नहीं कि जिन मंडलियों में मैंने प्रचार किया उनमें पापियों की भरमार थी।[22] कुछ लोग इस पाप से, कुछ उस पाप से जूझते हैं (याकूब 1:14),परन्तु हम *सब* पाप से जूझते हैं (रोमियों 3:23)। हम हर मनुष्य को *वैसे ही* करने की चुनौती देते हैं, जैसे परमेश्वर कहता है, ज़्योंकि परमेश्वर को इससे दूसरा ढंग पसंद नहीं है (मज़ी 7:21से), परन्तु साथ ही, हम अपनी कमियों को भी स्वीकार करते हैं। पाप हो जाने पर हम मन फिराते और अपने पापों को अंगीकार करते और परमेश्वर से क्षमा मांगते हैं, और हमारा विश्वास होता है कि वह हमें क्षमा कर देगा। संघर्ष में लगे दूसरे लोगों के साथ हम एक-दूसरे को ऊंचा उठाने, सांत्वना देने, और दृढ़ करने का यत्न करते हैं।

उसे चलते रहने के लिए निरन्तर सामर्थ की आवश्यकता थी

काश, मैं कह सकता कि जब आपको क्षमा मिल जाए, तो मामला खत्म हो जाता है और यह वैसा ही है जैसे कभी पाप हुआ ही न हो। परन्तु अफसोस, ऐसा है नहीं। एक क्षण में आपको अपने पाप की क्षमा मिल सकती है, परन्तु उस गड़बड़ को ठीक करने के लिए वर्षों लग सकते हैं। हम पढ़ते हैं, ''जान रखो कि तुमको तुज़्हारा पाप लगेगा'' (गिनती 32:23) और ''मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा'' (गलतियों 6:7)। दाऊद ऊरिय्याह पर तलवार चलने का जिज़्मेदार था; अब उसने वही काटना था जो उसने बोया था।[23] नातान ने उसे बताया:

> ... हित्ती ऊरिय्याह को तू ने तलवार से घात किया, और उसकी पत्नी को अपनी कर लिया, और ऊरिय्याह को अम्मोनियों की तलवार से मरवा डाला है। इसलिए अब तलवार तेरे घर से कभी दूर न होगी, ज़्योंकि तू ने मुझे तुच्छ जानकर हित्ती ऊरिय्याह की पत्नी को अपनी पत्नी कर लिया है (12:9, 10)।

अगली कुछ आयतें दाऊद के अंतिम बीस वर्षों की रूपरेखा बताती हैं:

> यहोवा यों कहता है, कि सुन, मैं तेरे घर में से विपत्ति उठाकर तुझ पर डालूंगा; और तेरी पत्नियों को तेरे साम्हने लेकर दूसरे को दूंगा, और वह दिन दुपहरी में तेरी पत्नियों से कुकर्म करेगा। तू ने तो वह काम छिपाकर किया; पर मैं यह काम सब इस्राएलियों के साम्हने दुपहरी में करवाऊंगा। ... तौभी तू ने जो इस काम द्वारा यहोवा के शत्रुओं को तिरस्कार करने का बड़ा अवसर दिया है, इस कारण तेरा जो बेटा उत्पन्न हुआ है वह अवश्य ही मरेगा (12:11-14)।

इन खतरनाक भविष्यवाणियों में से अंतिम भविष्यवाणी तब पूरी हुई जब दाऊद का बेटा बीमार होकर मर गया।[24] हमारा अगला पाठ उस ''बुराई'' पर केंद्रित रहेगा, जो दाऊद के अपने घराने से उठी: दाऊद ने अपने बच्चों में सम्मान खो दिया; दाऊद की बेटी तामार का उसी के पुत्र अम्नोन ने बलात्कार कर दिया; अम्नोन को एक और पुत्र अब्शालोम ने मार डाला; अब्शालोम ने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह किया था; अब्शालोम मार डाला गया। अब्शालोम के विद्रोह में ''दूसरे'' द्वारा उसकी पत्नियों से कुकर्म करने की भविष्यवाणी पूरी हुई (2 शमूएल 16:22)। इस पुस्तक के अंतिम पाठों में, हम देखेंगे कि किस प्रकार तलवार बार-बार चलती है।

मैं फिर कहता हूं, पाप बड़ा ही विनाशकारी है! यह इतना ज़तरनाक है कि क्षमा के बावजूद, इसके प्रभाव खत्म नहीं होते! हमारा प्रभाव खत्म हो जाता है। निर्दोष लोगों को कष्ट होता है। तलवार के घाव कई वर्षों तक रह सकते हैं। हमारा अपने जवानों को यह कहना आश्चर्य की बात नहीं है कि, ''पाप से बचे रहो। जवानी की लालसा तुम्हें पाप में न ले जाए। परीक्षा से भागो।'' इसके परिणाम भयंकर हैं!

दाऊद को तुरन्त क्षमा की आवश्यकता थी। उसे अंधकार भरे दिन प्रत्येक में जीवित रहने के लिए निरन्तर सामर्थ भी चाहिए थी।

दाऊद कैसे बच *गया* ? क्षमा की उसकी निश्चितता ने सहायता की (भ.सं. 32:1, 2)। नातान द्वारा दिए गए आश्वासन के अतिरिक्त, शेष अध्याय में प्रभु ने दाऊद को संक्षिप्त प्रमाण दिया कि उनका सम्बन्ध बहाल हो चुका है: एक प्रमाण यह है कि उनके पहलौठे की मृत्यु के बाद परमेश्वर ने दाऊद और बतशेबा को एक और पुत्र दिया। उन्होंने उसका नाम सुलैमान रखा, जिसका अर्थ है ''शांत''; नातान[25] ने उसका नाम ''यदीद्याह'' रखा, जो उसी शब्द से निकला है जिससे ''दाऊद'' और उसका अर्थ है ''यहोवा का प्रिय।'' अध्याय के अंत में एक और प्रमाण दिया जाता है: रब्बा नगर पर विजय के संकेत देकर

दाऊद के युद्धों का सफलतापूर्वक समापन। परमेश्वर के साथ उसके सज़्बन्ध फिर से बहाल होने का दाऊद के लिए किसी भी दूसरी चीज से अधिक महत्व था। एक बार आश्वस्त हो जाने के बाद वह आगे चल सकता था।

इस आश्वासन के साथ दाऊद का यह विश्वास भी जुड़ा हुआ था कि भविष्य में परमेश्वर उसकी सहायता करेगा और उसे दृढ़ करेगा। दाऊद ने परमेश्वर से कहा, ''तू मेरे छिपने का स्थान है; तू संकट से मेरी रक्षा करेगा'' (भजन संहिता 32:7)।

दाऊद की एक और बात जिससे सहायता मिली, वह बात थी उसे समर्थन और सहारा देने वाले मित्रों की उपस्थिति। नातान दाऊद के साथ था (2 शमूएल 12:25; 1 राजा 1:8से), और दाऊद के और भी मित्र थे, जिनमें सादोक (2 शमूएल 15:24), हूशै,[26] और माकीर[27] प्रमुख थे। इन मित्रों ने दाऊद के कुछ बुरे दिनों में उसकी सहायता की थी।

परमेश्वर हमारी सहायता के लिए ऐसे ही रास्ते निकालता है। यदि हम मन फिराएं और उसकी इच्छा के अनुसार करें तो हमें, भी, क्षमा की प्रतिज्ञा मिलती है (प्रेरितों 2:38; 1 यूहन्ना 1:9)। इसके अलावा परमेश्वर ने हमें आश्वासन दिया है कि वह हमारे साथ रहेगा। ''प्रभु मेरा सहायक है; मैं न डरूंगा; मनुष्य मेरा ज़्या कर सकता है?'' (इब्रानियों 13:6)। अंत में परमेश्वर ने हमारे लिए एक सहयोगी समूह अर्थात लोगों की मंडली उपलज़्ध कराई है, जिसे कलीसिया या चर्च कहते हैं। हम में से हर एक को प्रभु की कलीसिया का भाग होना आवश्यक है (प्रेरितों 2:38, 47; 1 कुरिन्थियों 12:13; इफिसियों 1:22, 23; 5:23, 25), और हमारे लिए उस मंडली के साथ काम करना तथा आराधना करना आवश्यक है, जहां हमें प्रोत्साहन मिलेगा।[28]

सारांश

बाइबल के नायकों के चित्रों में रंग भरते समय पवित्र आत्मा उन्हें पूरी तरह से भरता अै। इससे कुछ लोगों को चिंता होती है, परन्तु मुझे सहायता मिलती है। इससे मुझे यह अहसास करने मे सहायता मिलती है कि कोई भी मनुष्य इतना स्थिर नहीं है कि उसके जीवन में कभी पाप न आ सके। यह बात मुझे चौकस रहने की चुनौती देती है। यह मुझे यह अहसास करने में भी सहायक है कि बिना टूटे मन के प्रभु से क्षमा नहीं पाई जा सकती। इससे मुझे अपने आप को परमेश्वर के अनुग्रह पर छोड़ने की हिज़्मत मिलती है।

हमारी यह कहानी अधिकतर घिनौनी ही है, परन्तु मुझे उज़्मीद है कि आपने सुज़द अंत का अनुमान लगाया है। दाऊद का सज़्बन्ध परमेश्वर से फिर बहाल हो गया। जीवन की सब समस्याओं के बावजूद, दाऊद अपने बाद के सब राजाओं के लिए एक आदर्श बन गया (1 राजा 15:3)। मरने के एक हज़ार वर्ष बाद भी दाऊद को परमेश्वर के मन के अनुसार एक पुरुष के रूप में जाना जाता था (प्रेरितों 13:22)। दाऊद का मन संवेदनशील था।

मैं नहीं जानता कि आपका जीवन कैसा है; परन्तु यदि यह बतशेबा के साथ पाप करने के बाद दाऊद जितना बुरा है, तो मैं आपको आश्वासन देता हूं कि आपकी कहानी का भी सुखद अंत हो सकता है, यदि आप अपने पाप से मन फिराने, उस पाप से मुड़ने और

परमेश्वर की इच्छा मानने को तैयार हैं।

प्रवचन नोट्स

अध्याय 11 का इस्तेमाल याकूब 1:14, 15 में दी गई रूपरेखा की तरह पाप के बढ़ने के स्पष्ट उदाहरण के रूप में किया जा सकता है। इस सामग्री की रूपरेखा ''भड़कीली दृष्टि,'' ''कामातुर कार्य'' और ''टालमटोल करने वाले परिणाम'' (स्टडी गाइड ऑन *डेविड, ए मैन आफ़्टर गॉड'स ओन हार्ट* [फुलर्टन, कैलिफोर्निया: इनसाइट फॉर लिविंग], 102, 103)।

आज हर सेज़्यूलर मंच से ''सुरक्षित यौन सज़्बन्ध'' का प्रचार हो रहा है, व्यभिचार के पाप तथा इसके परिणामों की शिक्षा की बड़ी आवश्यकता है (नीतिवचन 6:32)। लिन्न एन्डर्सन द्वारा अपनी पुस्तक *फांइडिंग द हार्ट टू गो ऑन* ([सैन बर्नाडिनो, कैलिफोनिया:हेयर'स लाइफ पज़्लिशर्स, 1992], 129-33)। में व्यभिचार के बारे में दिए चार सिद्धान्तों पर ध्यान दें। ''सुरक्षित यौन सज़्बन्ध'' के बजाय हमें '' *पवित्र* यौन सज़्बन्ध'' (अर्थात, परमेश्वर द्वारा स्वीकृत विवाह में) पर शिक्षा की आवश्यकता है।

अनुमान लगाया गया है कि इस पाठ की घटनाओं के समय दाऊद की उम्र 50 वर्ष के लगभग थी। यह पुरुषों के मध्य जीवन में आने वाले संकट पर पाठ का आरज़्भ हो सकता है।

दाऊद के पाप को सामने लाने का नातान का उदाहरण ''विरोध करने'' की आवश्यकता को दिखाता है (नीतिवचन 27:5, 6) और विरोध करने का ढंग दिखाता है (गलतियों 6:1; नीतिवचन 15:23; 25:11)। विरोध करने के सज़्बन्ध में लिन्न एन्र्डसन ने पांच बातें लिखी हैं (*फांइडिंग द हार्ट टू गो ऑन,* 144-48)। यदि हम लोगों से प्रेम करते है, तो हम उन्हें शारीरिक, भावनात्मक तथा/या आत्मिक रूप में नाश करने वाली बातों को नजरअंदाज नहीं कर सकते।

टिप्पणियां

[1]घर रुकने का विचार दाऊद का अपना नहीं होगा (2 शमूएल 18:3; 21:17)। इसके बावजूद यरूशलेम में ठहरने का अंतिम निर्णय लेने की ज़िम्मेदारी दाऊद की ही थी। [2]यह तथ्य कि वह अपने ''पलंग पर से उठ कर'' संकेत देता है कि उसने दोपहर बाद की झपकी ली थी। [3]बाइबल इस बारे में चुप है कि बतशेबा दोषी थी या नहीं। दाऊद की वासना भड़काने में उसका कितना योगदान था? ज़्या वह दाऊद के पास स्वेच्छा से आई या उसने कोई विरोध जताया था? ज़्या उसने सचमुच ऊरिय्याह की मृत्यु का शोक किया या यह केवल दिखावा था? हम इन प्रश्नों के उज़र नहीं दे सकते। परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखक के अनुसार तो यह *दाऊद का* ही पाप था। लेखक का ध्यान तो *दाऊद* की ओर था। [4]मालूम नहीं बतशेबा कहां नहा रही थी या दाऊद ने उसे कैसे देख लिया। यह भी ज्ञात नहीं है कि बतशेबा वास्तव में कर ज़्या रही थी। हो सकता है वह अपने शरीर का कुछ भाग ही धो रही हो। आवश्यक नहीं कि वह पूर्णतया नंगी हो। हम यह नहीं मान सकते कि उसने दाऊद को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए जान बूझ का ऐसा किया होगा। [5]दूसरा शमूएल 11:4 में लिखा है ''वह उसके साथ सोया (वह तो ऋतु से शुद्ध हो गई थी।) तब वह अपने घर लौट गई।'' NASB में है ''जब उसने अपने आप को शुद्ध कर लिया तो अपने घर लौट गई।'' RSV में

है, ''(अब वह अपने आप को अशुद्धता से शुद्ध कर रही थी।)।'' NIV का अनुवाद है ''(उसने अपने आप को अशुद्धता से शुद्ध कर लिया था।)फिर वह अपने घर लौट गई।'' ''ऋतु'' सज़्भवतया उसके मासिक धर्म को कहा गया है जिसमें स्त्री औपचारिक रूप से सात दिनों तक अशुद्ध रहती थी (लैव्यव्यवस्था 15:19-24)। लेखक शायद यह साबित करने के लिए कि दाऊद के पास आने के समय वह गर्ज़वती नहीं थी, इस ओर ध्यान दिला रहा था कि व्यभिचार उसके मासिक धर्म के कुछ समय बाद हुआ था। यदि दाऊद को पता लगाने में कई दिन लग गए तो इससे भी पता चल सकता है कि बतशेबा इतनी जल्दी गर्भवती कैसे हो गई। इससे आयत 2 के ''नहाती हुई'' की व्याज़्या भी मिल जाएगी; हो सकता है कि वह अपने आप को शुद्ध करने के लिए नहा रही हो। इसमें शुद्धता पर उसके ध्यान देने और दाऊद द्वारा जाने अनजाने में इसकी ओर ध्यान न देने में अन्तर का भी पता चलता है। [6]उत्पज़ि 43:34 में ''भोजन-वस्तुएं'' के लिए प्रयुज़्त इब्रानी शज़्द ज़ोजन के लिए ही है। KJV, ASV और NKJV में यह माना जाता है कि 2 शमूएल 11:9 वाला इनाम घर ले जाने के लिए खाने का सामान ही था। [7]दाऊद अपने महल की छत से उसके घर को देख सकता था। [8]ज़्या इसका अर्थ यह है कि सेना संदूक को युद्ध के मैदान में साथ ले गई थी जिस कारण यह पलिश्तियों के हाथ में चला गया (1 शमूएल 4)? आवश्यक नहीं, संदूक यरुशलेम में अस्थाई तौर पर रखा गया था। यदि संदूक रज़्बा में ले जाया गया *था,* संभवतय आराधना के उद्देश्यों के लिए। दाऊद को मालूम था कि शुभ लक्षण के लिए में संदूक को नहीं ले जाया जा सकता था (तु. 2 शमूएल 15:25)। [9]2 शमूएल 11:21, 23, 24 पर ध्यान दें। दूसरा शमूएल 12:9 कहता है कि ऊरिय्याह की मौत ''अज़्मोनियों की तलवार से'' हुई, परन्तु इसका अर्थ केवल इतना ही हो सकता है कि अज़्मोनियों ने युद्ध में उसे मार डाला। [10]योआब ने पूर्वानुमान लगाया कि दाऊद अबीमेलेक के चज़्की के पाट से मारे जाने के बारे में कुछ अवश्य कहेगा ज़्योंकि वह शहर की दीवार के बहुत निकट था। न्यायियों 9:50-57 इस कहानी को बताता है। यह संभवतय: सभी सैनिक अगुओं के लिए एक सबक था।

[11]हमें यह नहीं बताया गया कि उसका शोक वास्तविक था या नहीं, और अनुमान लगाने का कोई लाभ भी नहीं है। [12]ध्यान दें कि बच्चे के जन्म की बात कितनी दूर तक फैल चुकी थी: 2 शमूएल 12:14। [13]दूसरे को शराब पिलाने का पाप (हबज़्कूक 2:15, 16) तथा अन्य पापों का उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं। [14]एक मजबूत परज़्परा के अनुसार भजन संहिता 32 दाऊद के पाप के परिणाम के बाद लिखा गया। [15]इन आयतों में LB संस्करण का अनुवाद स्पष्ट है। [16]हमने पिछली बार नातान को दाऊद की कहानी में देखा था जब वह मन्दिर बनाने की योजना बना रहा था (2 शमूएल 7)। [17]अपने पाप के बजाय दूसरे के पाप देखना आसान है। [18]यह निर्गमन 22:1 की शर्तों से मेल खाता था। [19]दाऊद ने अपने शज़्दों के साथ अपने ऊपर दोष लगाया। तरस न दिखाने वाला वह स्वयं ही था। [20]दाऊद ने नातान द्वारा दिए दृष्टांत के धनी आदमी को मृत्यु दण्ड का दोषी बताया था, यद्यपि कानूनी तौर पर वह अपने अपराध के लिए मृत्यु दण्ड के योग्य नहीं था। दूसरी ओर, दाऊद अपने व्यभिचार तथा हत्या के कारण मृत्यु के योग्य *था* (लैव्यव्यवस्था 20:10; 24:17), परन्तु परमेश्वर ने उस दण्ड से उसे दयापूर्वक छोड़ दिया।

[21]भ.सं. 32:1, 2. शज़्दरचना में कुछ अंतर है ज़्योंकि भजन संहिता 32 का अनुवाद इब्रानी शास्त्र से हुआ है जबकि प्रेरित प्राय: यूनानी (सप्तति) अनुवाद से उद्धृत करते थे। [22]जब मैं इसका प्रचार करता हूं, तो मैं कहता हूं, ''उज़्मीद है कि जब मैं आपको बताऊं कि आपके सामने खड़ा व्यज़्ति पापी है, आपके पीछे वाला व्यज़्ति एक पापी है, आपके दाईं ओर वाला व्यज़्ति पापी है और आपके बाईं ओर वाला व्यज़्ति पापी है, तो आप चौंकेंगे नहीं। हम *सब* पापी हैं।'' [23]अगले पाठ में इस सत्य को विस्तार से बताया जाएगा। [24]''जब दाऊद का बच्चा मर गया'' पर अतिरिज़्त लेख देखें। [25]इस बार नातान *अच्छी* खबर लेकर आया। [26]2 शमूएल 15:37 में हूशै को ''दाऊद का मित्र'' कहा गया है। [27]2 शमूएल 17:27। यह वही है जिसने मपीबोशेत को रखा हुआ था। [28]इस प्रवचन को देते समय, मैं यहां पर अज़्सर मुस्कुराता और कहता हूं, ''यदि मैं कहीं अधिक बारीकी में चला जाऊं, तो मेरा मानना है कि यह मंडली ऐसी ही मंडली है। हम उज़्मीद रखते हैं कि आप हमारे साथ मिल जाएंगे। मुझे विश्वास है कि इससे आपके जीवन में आशीष मिलेगी।''

जब दाऊद का बच्चा मर गया

2 शमूएल 12:15-24

बतशेबा के साथ दाऊद के पाप के बाद, नातान ने उसका सामना किया और कहा, ''तू न मरेगा। तौभी तू ने जो इस काम के द्वारा यहोवा के शत्रुओं को तिरस्कार करने का बड़ा अवसर दिया है, इस कारण तेरा जो बेटा उत्पन्न हुआ है वह अवश्य ही मरेगा''[1] (2 शमूएल 12:13, 14)। नातान के जाते ही शिशुगृह से किसी नवजात के चीखने की आवाज़ आई,[2] जिस ने दाऊद के अंदर तक असर किया। ''और जो बच्चा ऊरिय्याह की पत्नी से दाऊद के द्वारा उत्पन्न था, वह यहोवा का मारा बहुत रोगी हो गया'' (आयत 15)।

बच्चे बीमार होते हैं,और कई बार उनकी मृत्यु भी हो जाती है। यह ऐसी सच्चाई नहीं है जिसका हम सामना करना पसन्द करते हो; यह ऐसी सच्चाई नहीं है जिसका हम सामना करना पसन्द करते हों; परन्तु इसके बावजूद यह एक सच्चाई है। मैंने ऐसे बच्चों के जनाज़े पर प्रचार किया है जिनकी पैदा होते ही मौत हो गई थी। कई बार मृत्यु से मुलाकात (इब्रानियों 9:27) देरी के बजाय पहले आ जाती है।

जब एक बच्चा बीमार हो मर जाता है, इसका कोई कारण हो सकता है

हम परमेश्वर के सब उद्देश्यों को नहीं जान सक्कते; हम निश्चित तौर पर कुछ भी नहीं कह सकते कि ''परमेश्वर ने आप के बच्चे को स्वर्गलोक की शोभा बढ़ाने के लिए बुला लिया।'' कई बार किसी बच्चे की मृत्यु निरर्थक बात होती है, जो पाप से पीड़ित संसार में रहने का परिणाम है। परन्तु बाइबल का हमारा हवाला बताता है कि कई बार इसका कोई कारण हांता है। हो सकता है कि हमें हर बार इसकी समझ न आए, परन्तु कई बार परमेश्वर एसा किसी कारण से करता है।

दाऊद की तरह, कई बार माता पिता का पाप ही इसका कारण हो सकता है। यह सही नहींलगता, परन्तु जीवन ऐसे ही चलता है। हर रोज़ हमें याद दिलाया जाता है कि निर्दाष लोग दुष्टों के पाप केकारण दुख उठाते हैं। बच्चों में जन्म से ही नशा, या एड्स जैसे लक्षण पाए जाते हैं, ज़्योंकि उनके माता पिता ने गलती की होती है। मैं यह सब इसलिए नहीं कहता कि आप सवाल करने लगें, ''परमेश्वर मेरे बच्चे को मारकर मुझे दण्ड ज़्यों दे रहा है?'' ऐसे स्वालों का कोई महत्व नहीं है। मैं यह सज़्भावना केवल इसलिए बताता हूं ज़्योंकि कई बार यह सच होता है।

अज़्सर किसी नवजात की मृत्यु उस नवाज के लिए आशीष होती है। यदि वह जीवित रहता, तो हो सकता है कि उसे कोई गंभीर बीमारी या परेशानी हो जाती। यह सुझाव दिया गया है कि परमेश्वर ने दाऊद के बच्चे को इसलिए मरने दिया ज़्योंकि दाऊद का पाप पता चलने पर, उस बच्चे के मन में यह बात बैठ जाती। उस समय अवैध, अर्थात ''हरामी''

बच्चा होने की बात बड़ी खतरनाक थी। हम नहीं जानते कि परमेश्वर ने ऐसा सोचा था या नहीं, परन्तु हम इतना अवश्य जानते हैं कि कई बार किसी नवजात की मृत्यु सचमुच ''भले के लिए'' होती है।

जब कोई बच्चा बीमार होता है, तो हमें पूरी कोशिश से उसके लिए प्रार्थना करनी चाहिए

जब उसका बच्चा बीमार पड़ गया तो ...

> दाऊद उस लड़के के लिए परमेश्वर से बिनती करने लगा; और उपवास किया, और भीतर जाकर रात भर भूमि पर पड़ा रहा। तब उसके घराने के पुरनिये उठकर उसे भूमि पर से उठाने के लिए उसके पास गए; परन्तु उसने न चाहा, और उसके संग रोटी न खाई (12:16, 17)।

दाऊद ने सात दिन और सात रात तक, बिना कुछ खाए उस बच्चे के जीवन के लिए परमेश्वर के सामने अपना मन खोल दिया। उसने ऐसा ज़्यों किया, जबकि परमेश्वर ने पहले ही कहा था कि वह बच्चा मर जाएगा? ज़्योंकि उसे विश्वास था कि हो सकता है कि परमेश्वर नरम पड़ जाए (12:22)। आखिर, उस पाप का जिसका दण्ड मृत्यु मिला था दोषी वह स्वयं भी तो था, परन्तु परमेश्वर ने यह कहते हुए कि ''तू न मरेगा'' (12:13) उसे छोड़ दिया था।

बच्चे के साथ जो भी हो, हालात कितने भी निराश करने वाले लगें, प्रार्थना करना हमेशा ही उपयुज़्त; ज़्योंकि हमारा परमेश्वर अनुग्रहकारी परमेश्वर है (12:22)।

जब कोई बच्चा मर जाता है, तो हमारे अपने जीवनों के टुकड़ों को उठाकर आगे बढ़ने का समय होता है

परमेश्वर अपने बच्चों की प्रार्थनाओं का उज़र हमेशा देता है, परन्तु कई बार उसका उज़र ''नहीं'' होता है। यह सबक कठिन है, परन्तु इसे सीखना आवश्यक है। दाऊद की लगातार और टूटे मन से प्रार्थना के बावजूद सात दिनों के संघर्ष के बाद वह बच्चा मर गया जब वह मर गया, तो दाऊद के सेवक उसे बताने से डरने गए। उन्होंने तर्क दिया, ''कि जब तक बच्चा जीवित रहा, तब तक उसने हमारे समझाने पर मन न लगाया; यदि हम उसको बच्चे के मर जाने का हाल सुनाएं, तो वह बहुत ही अधिक दुखी होगा'' (12:18)।

जब दाऊद ने अपने कर्मचारियों को फुसफुसाते हुए देखा, तो उसे पता चल गया कि बच्चा मर गया है। जब कर्मचारियों ने इस बात की पुष्टि कर दी कि यह सत्य है, तो जो दाऊद ने किया उससे वह चकित रह गए। ''तब दाऊद भूमि पर से उठा, और नहाकर तेल लगाया, और वस्त्र बदला; तब यहोवा के भवन में जाकर दण्डवत की; फिर अपने भवन में आया; और उसकी आज्ञा पर रोटी उसको परोसी गई, और उसने भोजन किया'' (12:20)। आज हम कहते हैं, ''वह उठा, नहाया और कपड़े बदले, पेट भर नाश्ता किया और दफ़्तर

चला गया।'' दाऊद बच्चे को वापस नहीं ला सकता था (आयत 23)। इतनी देर तक शोक के बावजूद उसके पुत्र की सहायता न इससे दाऊद दुखी ही हुआ। चाहे कठिन था, परन्तु जीवन चलना ही था।

जब कोई बच्चा मर जाता है, तो हमें स्वर्ग में फिर से मिलने के लिए तैयारी करनी की आवश्यकता है

दाऊद के शतज्ध कर्मचारियों से पूछा, ''तू ने यह ज़्या काम किया है ? जब तक बच्चा जीवित रहा, तब तक तू उपवास करता हुआ रोता रहा; परन्तु ज्योंही बच्चा मर गया, त्योंही तू उठकर भोजन करने लगा'' (12:21)। दाऊद का उज़र सुसंतुलित है:

> जब तक बच्चा जीवित रहा तब तक तो मैं यह सोचकर उपवास करता और रोता रहा, कि ज़्या जाने यहोवा मुझ पर ऐसा अनुग्रह करे कि बच्चा जीवित रहे। परन्तु जब वह मर गया, फिर मैं उपवास ज़्यों करूं? ज़्या मैं उसे लौटा ला सका हूं? मैं तो उसके पास जाऊंगा, परन्तु वह मेरे पास लौट न आएगा (12:22, 23)।

यदि बाइबल में कोई बात स्पष्ट सिखाई गई है, तो वह यह है कि जब किसी बच्चे की मृत्यु हो जाती है, तो वह बच्चा स्वर्ग में जाता है (मज़ी 18:3; 19:14)। ज़्या आप माता पिता के रूप में पृथ्वी पर अपने हाथों से छिने उन नजवात बच्चों को पकड़ने और गले लगाने के उस अद्‌भुत पुनर्मिलन की कल्पना कर सकते हैं? परन्तु यह ''पकड़ना'' यदि मुझे अपने प्रिय बच्चे से फिर से मिलना हो, तो मुझे स्वर्ग में जाना होगा। ज़्या मैं तैयार हूं? ज़्या आप तैयार हैं ?

एक अर्थ में दाऊद ने कहा, ''मैं उसे वापस नहीं ला सकता, परन्तु जो मैं कर *सकता* हूं, वह यह है कि मैं उसके पास जा सकता हूं।''[6] मेरी प्रार्थना है कि जिन माता पिता के का कोई बच्चा मर गया है वे उनसे मिलने का निश्चय करें।

जब कोई बच्चा मर जाता है, तो हमें सब कुछ परमेश्वर के हाथों में छोड़ देना चाहिए

दाऊद क्रोधित और चिढ़ चिढ़ा हो सकता था। वह परमेश्वर पर आरोप लगा सकता था। वह परमेश्वर से बहस कर सकता था। इसके विपरीत, उसने ''यहोवा के भवन[7] में जाकर दण्डवत की'' (12:20)। परिस्थितिया सुधारने में केवल परमेश्वर ही हमारी सहायता कर सकता है।

जैसे पहले ध्यान दिया गया था, हम नहीं जानते कि परमेश्वर के मन में ज़्या है। हो सकता है कि परमेश्वर ने हमारे लिए अद्‌भुत वस्तुएं रखी हों जिनकी इस समय हम कल्पना भी नहीं कर सकते। दाऊद के मामले में, परमेश्वर ने उसे एक और पुत्र दे दिया, एक अद्‌भुत पुत्र जिसका नाम सुलैमान था।

> तब दाऊद ने अपनी पत्नी बतशेबा को शांति दी, और वह उसके पास गया; और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और उसने उसका नाम सुलैमान रखा। और वह यहोवा का प्रिय हुआ और उसने नातान भविष्यवक्ता के द्वारा संदेश भेज दिया; और उसने यहोवा के कारण उसका नाम यदीद्याह रखा (12:24, 25)।

हो सकता है, कि आपको भी एक और बच्चा मिल जाए; हो सकता है कि न मिले। महत्वपूर्ण यह है कि आप परमेश्वर के साथ बने रहें, चाहे कुछ भी हो जाए। यदि आप ऐसा करते हैं, तो वह आपके जीवन को आशीष देगा। वह सचमुच आशीष देगा।

टिप्पणियां

[1]बच्चे की मृत्यु का सीधा सज़्बन्ध इस तथ्य से है कि अविश्वासी लोगों को दाऊद के पाप का पता था (या उन्हें पता चल जाना था)। मुज़्य बात यह हो सकती है कि यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर ने दाऊद के काम को स्वीकृति नहीं दी तातकालिक और स्पष्ट चिह्न आवश्यक था। [2]कुछ लोग बच्चे की आयु का अनुमान तीन माह लगाते हैं। [3]परमेश्वर के पूर्व प्रबन्ध के ऐसे भेद हैं जिन्हें हम कभी नहीं जान सकते। 2 शमूएल 12:10–14 की दूसरी सब भविष्यवाणियां पापूर्ण लोगों में पूरी हुईं। उदाहरण के लिए परमेश्वर ने कहा, ''मैं ... तेरी पत्नियों को ... दूसरे को दूंगा'' (आयत 11)। परन्तु परमेश्वर ने यह सीधे नहीं किया; बल्कि, दााऊद के यरूशलेम से भाग जाने पर अबशालोम ने उन्हें ले लिया। परमेश्वर ने भविष्य में देखा, फिर अबशालोम को ऐसा करने की *अनुमति दी* फिर परमेश्वर ने बालक को कैसे ''मारो'' और उसे बीमार किया? ज़्या उसने स्वयं किया, या उसने उस समय की कोई सामान्य बीमारी के द्वारा जो उस समय नवजात शिशुओं के लिए जानलेवा होती थी? हम यह कभी नहीं जान पाएंगे। परन्तु परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखक ने हमें यह बताना चाहा कि यह दाऊद के पाप का परमेश्वर की ओर से दण्ड था। [4]शायद वह स्थान जहां दाऊद लेटा हुआ था उस तज़्बू के सामने का मैदान था जिसमें संदूक रखा था। [5]स्वर्ग में हमारे सज़्बन्ध ऐसे नहीं होंगे जैसे पृथ्वी पर हैं (मज़ी 22:30), परन्तु बाइबल सिखाती है कि हम स्वर्ग में ''हम'' होंगे और एक दूसरे को पहचानेगे। जो दृश्य मैंने बनाया है वैसा दृश्य, आत्मिक तौर पर हम कल्पना भी नहीं कर सकते, परन्तु ऐसा लगता है। [6]कुछ टीकाकारों का मानना है कि दाऊद कह रहा था, ''मैं अपने बच्चे को कब्र से वापस नहीं ला सकता, परन्तु एक दिन मैं कब्र में उसके साथ होऊंगा।'' शायद यह सही है, यद्यपि मुझे यह ऐसा विचार लगता है जो सांत्वना देने से अधिक निराश करने वाला होगा। मुझे नहीं लगता कि नये नियम की हमारी इस जीवन के बाद के जीवन की समझ के साथ इस पद को पढ़ने में कोई हानि होगी। [7]शायद यह स्थान जिसमें दाऊद ने प्रवेश किया यरूशलेम में वह तज़्बू था जहां संदूक रखा गया था, परन्तु अधिक सज़्भावना यह है कि यह वह वास स्थान था जो अभी भी गिबोन में था।